IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 2, March 2024

Impact Factor: 7.394

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवादी विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

DR. VINAY KUMAR PINJANI

ASSOCIATE PROFESSOR IN POLITICAL SCIENCE, BABU SHOBHA RAM GOVT. ARTS COLLEGE, ALWAR, RAJASTHAN, INDIA

सार

स्वामी विवेकानन्द एक महान देशभक्त थे। उन्होंने अपने लेखों व भाषणों से लोगों में नवीन आत्मगौरव की भावना जगाई व भारतीय संस्कृति में नया विश्वास तथा भारत के उज्जवल भविष्य के लिए कार्य किया । वर्तमान में भी राष्ट्रीय एकता तथा देश के सर्वांगिण विकास के लिए राष्ट्रभक्ति की भावना अनिवार्य है।

परिचय

स्वामी विवेकानंद एक ऐसे आदर्श युवा हुए हैं, जो भारत में जन्मे परंतु जिन्होंने विश्वभर के करोड़ों युवाओं को प्रेरित किया. 1893 में शिकागो धर्म संसद में दिए गए भाषण की बदौलत वे पश्चिमी जगत के लिए भारतीय दर्शन और अध्यात्मवाद के प्रकाशस्तंभ बन गए. उसके बाद से वे युवाओं के लिए एक सदाबहार प्रेरणा स्रोत रहे हैं. 21वीं सदी में जबकि भारत के युवाओं को नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, वे अपने दायरों से बाहर आ रहे हैं और बेहतर भविष्य की तलाश कर रहे हैं. ऐसे में स्वामी विवेकानंद उनके लिए और भी प्रासंगिक हो गए हैं. जीवन अगर सार्थक नहीं है, तो उसे सफल नहीं कहा जा सकता. युवाओं की सबसे बड़ी खोज ऐसे सार्थक जीवन की है, जो हृदय को प्रेरित, मस्तिष्क को मुक्त और आत्मा को प्रज्ज्वलित करे. स्वामी विवेकानंद इसे अच्छी तरह समझते थे. उनके विचारों को इस चार सूत्री मंत्र के जरिए समझा जा सकता है, जिसमें सार्थक जीवन के लिए भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक खोज अनिवार्य है. भौतिक खोज से उनका अभिप्राय: है - मानव शरीर की देखभाल करना और ऐसी गतिविधियों को अंजाम देना, जो शारीरिक कष्टों को कम करने वाली हों. इसका लक्ष्य युवाओं को कोई कार्य करने के लिए शारीरिक दृष्टि से तैयार करना है. अगला स्तर सामाजिक खोज का है, जिसमें ऐसी गतिविधियों को अंजाम दिया जाता है, जो भौतिक कष्ट कम करने वाली हों. अस्पतालों, अनाथालयों और वृद्धावस्था आश्रमों का संचालन इसी स्तर के अंतर्गत आता है. अगला उच्चतर स्तर बौद्धिक खोज का है. इसके अंतर्गत विद्यालय, महाविद्यालय संचालित करना और जागरूकता एवं सशक्तिकरण कार्यक्रमों का संचालन शामिल है. किसी व्यक्ति द्वारा अपना बौद्धिक स्तर उन्नत बनाना, ज्ञान प्राप्त करना और उसका समाज में प्रचार-प्रसार करना इस श्रेणी के अंतर्गत आता है. गहन चिंतन करने वालों के लिए वे सर्वोच्च स्तर की आध्यात्मिक सेवा का सुझाव देते थे, जिसमें ध्यान और साधना शामिल है. परंतु ये स्तर कोई जल विभाजक नहीं है, कोई व्यक्ति एक स्तर पर काम करते हुए अन्य स्तर पर भी काम कर सकता है, जो उसकी खोज, क्षमता और पहुंच पर निर्भर है. उनकी खोज में बदलाव होने पर वे अन्य स्तरों पर भी जा सकते हैं.[1,2,3]

भौतिक खोज

विवेकानंद भलीभांति समझते थे कि अधिकतर युवा सार्थक अस्तित्व हासिल करने की आकांक्षा रखते हैं, परंतु वे सभी अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढऩे के लिए बौद्धिक और शारीरिक क्षमता से युक्त नहीं होते हैं. इसलिए स्वामीजी युवाओं से कहते थे कि वे अपनी आशंकाओं और भय पर नियंत्रण करें तथा शारीरिक और बौद्धिक दृष्टि से सुदृढ़ बनें. उन्होंने कहा था "हर चीज से डरना छोड़ो. आप शानदार काम करेंगे. जैसे ही आपको भय लगता है, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं रहता है. दुनिया में भय ऐसी वस्तु है, जो कष्ट का सबसे बड़ा कारण बनती है. भय रहित होना ऐसी स्थिति है, जो एक क्षण में स्वर्ग बना सकती है. शक्ति आपके भीतर है. आप कुछ भी कर सकते हैं और सब कुछ कर सकते हैं. अपने पर भरोसा करें. यह मत समझो कि तुम कमजोर हो; जागो और अपने भीतर दिव्य को महसूस करो. इसलिए उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक कि लक्ष्य हासिल न हो जाए."

विवेकानंद का विचार था कि युवा स्वयं अपने लिए या किसी अन्य के लिए सफल जीवन तभी जी सकते हैं, जब वे शारीरिक दृष्टि से उपयुक्त हों. उनका विश्वास था कि सामाजिक परिवर्तन के लिए काम करने के वास्ते ऊर्जा और क्षमता की आवश्यकता है, अत: उन्होंने युवाओं से कहा था कि वे बौद्धिक ऊर्जा और शारीरिक तंदरुस्ती दोनों को हासिल करने का प्रयास करें. विवेकानंद युवाओं से चाहते थे कि उनकी 'मांसपेशियां लौह की हों' और 'नसें इस्पात की हों'. उन्होंने कहा था "आप गीता पढऩे की बजाए फुटबाल के जरिए आकाश तक पहुंच सकते हैं". वे मानव शक्ति के कट्टर समर्थक थे और कहते थे कि "शक्ति ही जीवन है, कमजोरी मृत्यु है" और शक्ति के बिना कोई भौतिक जीवन नहीं जी सकता.

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

सामाजिक खोज

विवेकानंद युवाओं से यह अपेक्षा करते थे कि वे सामाजिक गतिविधियां संचालित करें, न केवल समाज की बेहतरी के लिए बल्कि अपने व्यक्तिगत विकास और वृद्धि के लिए भी सामाजिक कार्य करें. उन्होंने यह महसूस किया था कि समाज की सेवा करने की 'परिणति' उसे करने वाले व्यक्ति की सामाजिक और आध्यात्मिक वृद्धि की "समाप्ति" के रूप में सामने आती है. उन्होंने युवाओं को सलाह दी थी कि वे "मानव में ईश्वर की सेवा" करें. विवेकानंद ने अध्यात्मवाद को समाज सेवा के साथ जोड़ा. उन्होंने कहा, "अगले 50 वर्षों तक सिर्फ महान भारत माता की सेवा ही हमारा ध्येय वाक्य होना चाहिए. तब तक के लिए सभी भगवान हमारे दिमाग से निकल जाने चाहिएं". हृदय की पवित्रता और समाज की बेहतरी के लिए वे ईश्वर के स्थान पर जनसाधारण की उपासना की सलाह देते थे. विवेकानंद ने कहा था "चित्त शुद्धि" अथवा हृदय की पवित्रता आवश्यक है, जो आसपास के लोगों की पूजा के जरिए प्राप्त की जा सकती है. उन्होंने उपदेश दिया कि हमारे इर्दगिर्द विद्यमान मानव और जीव जंतु ही ईश्वर हैं जो हमारी पूजा और सेवा के योग्य हैं. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि "हमारा प्रथम ईश्वर अपने देशवासियों की पूजा है. हमें उनकी पूजा करनी है न कि एक दूसरे से ईर्ष्या और झगड़ा करना है."

नए भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानंद का बेजोड़ योगदान यह रहा कि उन्होंने दलितों के प्रति भारतीयों के दायित्व के बारे में उनके मस्तिष्क मुक्त बनाने का काम किया. उन्होंने जन-जन के लिए आवाज बुलंद की, सेवा का एक निश्चित दर्शन तैयार किया, और बड़े पैमाने पर सामाजिक सेवा संचालित करने का नेतृत्व किया. भारतीय युवाओं से समाज सेवा की अपील करते हुए, विवेकानंद ने कहा, "बाकी सब कुछ तैयार हो जाएगा, परंतु सुदृढ़, शक्तिशाली, भरोसेमंद युवाओं की आवश्यकता होगी, जो अपने आधार के प्रति ईमानदार हों. ऐसे सौ लोग विश्व में क्रांति ला सकते हैं.

विवेकानंद ने शारीरिक स्फूर्ति और समाज सेवा का समर्थन किया, परंतु युवाओं से यह भी कहा कि वे दोनों जगतों को समझने के लिए अपनी बौद्धिक ताकत बढ़ाएं. उन्होंने सबके लिए शिक्षा पर बल दिया. उन्होंने कहा "शिक्षा जानकारी की ऐसी मात्रा भर नहीं है, जिसे आपके मस्तिष्क में रख दिया जाए, जो वहां हुड़दंग मचाती रहे, और जीवनभर जिसे पचाया न जा सके, बल्कि शिक्षा जीवन बनाने वाली, व्यक्तित्व बनाने वाली और चरित्र बनाने वाले विचारों को सम्मिलित करने वाली होनी चाहिए."

भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए स्वामी विवेकानंद ने अनेक उपाय सुझाए, जिनमें शिक्षा लोगों के सशक्तिकरण के लिए प्राथमिक साधनों में से एक है. उन्होंने एक बार कहा था "शिक्षा, वही सार्थक है, जो जन-साधारण को जीवन के प्रति संघर्ष के लिए तैयार करे, जो चरित्र की शक्ति उद्घाटित करे, दर्शन की भावना पैदा करे, और एक शेर जैसा साहस पैदा करे. वास्तविक शिक्षा वह है, जो व्यक्ति को पैरों पर खड़ा करे." उनके लिए शिक्षा सीखने की एक प्रक्रिया है, जो चरित्र का निर्माण करती है और युवाओं में मानव मूल्यों का संचार करती है.[4,5,6]

आध्यात्मिक खोज

स्वामी विवेकानंद पश्चिमी सभ्यता की प्रशंसा करते थे, परंतु वे भारतीय दर्शन और अध्यात्म के साथ प्रेम करते थे. उन्होंने सुझाव दिया था कि युवा पश्चिम से बहुत सारी चीजें सीख सकते हैं, लेकिन उनका भरोसा अपनी आध्यात्मिक धरोहर में अवश्य होना चाहिए. उन्होंने कहा था "पश्चिम के चिंतनशील व्यक्ति हमारे प्राचीन दर्शन में, विशेषकर वेदांत दर्शन में, चिंतन की वह नई धारा पाते हैं, जिनकी उन्हें तलाश है, जो उनके लिए बौद्धिक भूख और प्यास बुझाने के लिए आध्यात्मिक भोजन और पेय के समान है."

आज जब हमारा युवा भौतिक सफलता के बावजूद अपने को अत्यधिक अकेला, उद्देश्यहीन, तनावग्रस्त और मानसिक रूप से थका हुआ महसूस करता है, तो जीवन के बृहत्तर लक्ष्यों के प्रति विवेकानंद के विचार उसे मुक्ति प्रदान करते हैं. वे युवाओं को सलाह देते हैं कि वे आध्यात्मिक खोज की दिशा में आगे बढ़ें और बृहत्तर लक्ष्य हासिल करें. उनका कहना है, "जीवन अल्पावधि है, आत्मा अजर और अमर है, तथा मृत्यु निश्चित है, अत: हमें एक महान आदर्श को चुन कर अपना समूचा जीवन उसके प्रति समर्पित कर देना चाहिए."

एक बार जीवन में कठिनाइयों के बारे में भाषण देते हुए विवेकानंद ने 'त्याग' या 'बलिदान' और 'सेवा' अथवा 'नि:स्वार्थ सेवा' के विचारों के साथ राष्ट्रव्यापी स्तर पर जीर्णोद्धार का आह्वान किया. उन्होंने इन विचारों को युवाओं के जीवन को आकार देने के सर्वाधिक आवश्यक पहलू बताया. स्वामी विवेकानंद ने इस बात पर बल दिया कि जीवन की यही पद्धति 'आध्यात्मिक खोज' है. इस दर्शन के केंद्र में जीत और भौतिक संपदा की क्षणभंगुरता निहित है. उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे एक नेक विचार, उच्च आदर्श और उच्चतर स्थिति के लिए जियें ताकि वे क्षणभंगुरता पर नियंत्रण कर सके.[7,8,9]

राष्ट्र निर्माण

विवेकानंद ने इन चार खोजों को युवाओं के लिए आदर्श और लक्ष्य के रूप में रखा. इन सेवाओं का प्रयोजन व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चेतना का विकास करना था. उन्होंने भारत नाम की इस भूमि की सभ्यता मूल्य प्रणाली में विश्वास व्यक्त किया. इसलिए उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपनी सामूहिक ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करें. भारत के बारे में उनका लक्ष्य एक रूपांतरित समाज का था, जो गरिमा, आजादी और आत्मविश्वास से प्रेरित हो और जिसका आधार शक्ति, प्रेम और सेवा हो. उन्होंने परिकल्पना की थी कि ऐसा भारत समता पर आधारित समाज होगा, जो ऊंच-नीच की भावना से मुक्त होगा. उन्होंने समाज की एकता की भी बात की, जिसकी आवश्यकता आज की दुनिया में उस समय महसूस की जाती है, जब हम विभिन्न स्तरों

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

पर संघर्ष देखते हैं. स्वामी विवेकानंद ने कहा था "भारत में जाति समस्या का समाधान ऊंची जातियों को नीचे लाने में नहीं है, बल्कि समाज के निचले स्तर के लोगों को ऊंचे स्तर पर पहुंचाने में है."[10,11,12]

स्वामी विवेकानंद को कभी कभी कर्मयोगी कहा जाता है, जो सर्वथा उपयुक्त है. उन्होंने अपनी शिक्षाओं को अपने जीवन से सिद्ध किया. उन्होंने आध्यात्मिक चेतना का मार्ग चुना और इस भौतिक जगत में दूसरों के मानसिक और शारीरिक कष्टों को दूर करने का प्रयास किया. उन्होंने समाज के सर्वाधिक दलित और उपेक्षित लोगों के बीच काम किया और उन्हें ईश्वर समझा, जो उनकी शिक्षाओं के अनुरूप था. उन्होंने सर्वाधिक अलग-थलग वर्ग की सेवा करते समय अपनी सामाजिक चेतना का विकास किया और उसे सामाजिक कार्य में तब्दील किया.
स्वामी विवेकानंद की प्रासंगिकता आज इस बात में है कि उन्होंने युवाओं के लिए आदर्श और लक्ष्य निर्धारित किए. उन्होंने इन लक्ष्यों को भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक अन्वेषणों के जरिए हासिल करने के वैज्ञानिक मार्ग का सूत्रपात भी किया. युवाओं को यह विकल्प प्रदान किया गया कि वे स्वामी विवेकानंद द्वारा बताए गए चार में से कोई एक मार्ग का चयन करें और शांति, समृद्धि एवं खुशहाली हासिल करें. लिंग, जन्म, जाति या अन्य पहचान चिन्हों का भेद किए बिना चुनने की स्वतंत्रता इस मार्ग की स्वीकार्यता को कई गुणा बढ़ा देती है.
स्वामी विवेकानंद और उनके संदेश को समझना और उसे सभी युवाओं के सामने रखना उन अनेक समस्याओं के समाधान का सरलतम मार्ग है, जिनका सामना आज भारत को करना पड़ रहा है. प्रत्येक व्यक्ति अपने को बृहत्तर लक्ष्य के लिए तैयार करते हुए स्वयं शुरुआत कर सकता है. उसे यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उसकी भौतिक, मानसिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक शक्तियां सामने आने वाले कार्य के अनुरूप हैं.
स्वामी विवेकानंद मानव मस्तिष्क और बृहत्त मानव समाज के एक महान पर्यवेक्षक थे. वे समझते थे कि किसी भी सामाजिक परिवर्तन को शुरू करने के लिए व्यापक ऊर्जा और इच्छा शक्ति की आवश्यकता है. इसलिए उन्होंने युवाओं का आह्वान न केवल बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के लिए किया, बल्कि शारीरिक शक्ति बढ़ाने पर भी बल दिया.
जिम्मेदारी अब युवाओं पर है कि वे स्वामी विवेकानंद द्वारा बताए गए मार्ग पर चलें और भारत को फिर से विश्व गुरू बनाने के उनके सपने को साकार करें. युवाओं के लिए यह उचित समय है कि वे अपना भय दूर करने के लिए आगे आएं, जैसा कि विवेकानंद ने कहा था, और क्षणभंगुर को सशक्त, बीमार को स्वस्थ, कमजोर को ताकतवर बनाते हुए तथा अस्थिरता के स्थान पर स्थिरता और निरर्थक को सार्थक बनाते हुए भारत के निर्माण का बीड़ा उठाएं.

विचार-विमर्श

"केप कैमोरिन में माता कुमारी के मंदिर में, भारतीय चट्टान के आखिरी टुकड़े पर बैठे हुए - मुझे एक योजना सूझी: हम इतने सारे संन्यासी घूम रहे हैं, और लोगों को तत्वमीमांसा सिखा रहे हैं - यह सब पागलपन है। क्या हमारे गुरुदेव ऐसा नहीं करते थे कहो, 'खाली पेट धर्म के लिए अच्छा नहीं है?' एक राष्ट्र के रूप में हमने अपना व्यक्तित्व खो दिया है और यही भारत में सभी उपद्रवों का कारण है। हमें जनता को जगाना होगा।"

कन्याकुमारी में "भारतीय चट्टान के अंतिम टुकड़े" (जिसे बाद में नरेंद्र रॉक मेमोरियल के रूप में जाना जाता है) पर ध्यान करते समय स्वामी विवेकानन्द ने "एक भारत के दृष्टिकोण" के बारे में यही कहा था । भारतीय जनता की दयनीय स्थिति से प्रभावित होकर उन्होंने इसे अपने अंदर समाहित किया। उनमें मातृभूमि भारत के प्रति सेवा और आत्म बलिदान की भावना है।

"मैं एक भारतीय हूं और हर भारतीय मेरा भाई है।" "अज्ञानी भारतीय, गरीब और निराश्रित भारतीय, ब्राह्मण भारतीय, अछूत भारतीय मेरे भाई हैं।" "भारतीय मेरा भाई है, भारतीय मेरा जीवन है, भारत के देवी-देवता मेरे भगवान हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का पालना है, मेरी युवावस्था का आनंद उद्यान है, पवित्र स्वर्ग है, मेरे बुढ़ापे का वाराणसी है।" "भारत की मिट्टी मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है; भारत की भलाई में मेरी भलाई है।" ये देशभक्त संत स्वामी विवेकानन्द के कुछ कथन थे जिन्होंने भारतीयों में एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान के प्रति चेतना जगाई।

यद्यपि राष्ट्रवाद के विकास का श्रेय पश्चिमी प्रभाव को दिया जाता है लेकिन स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता में गहराई से निहित है। उन्होंने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा में बहुत बड़ा योगदान दिया और भारत को 20वीं सदी में ले जाने में विशेष भूमिका निभाई। 20 वीं सदी के युवाओं पर उनका प्रभाव प्रतिष्ठित है।

स्वामी विवेकानन्द, जिनका जन्म नरेंद्र नाथ दत्त, 12 जनवरी, 1863 को भुवनेश्वरी देवी और विश्वनाथ दत्त के यहाँ हुआ था, एक भिक्षु और रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे । उन्होंने वेदांत और योग के भारतीय दर्शन को पश्चिमी दुनिया में पेश किया और उन्हें अंतरधार्मिक जागरूकता बढ़ाने, 19वीं सदी के अंत में हिंदू धर्म को विश्व मंच पर लाने का श्रेय दिया जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है, "राष्ट्रवाद एक राजनीतिक धर्म है जो लोगों के दिलों और इच्छाओं को उत्तेजित करता है और उन्हें इस तरह से सेवा और आत्म-बलिदान के लिए प्रेरित करता है जैसा कि हाल के दिनों में किसी भी विशुद्ध धार्मिक आंदोलन ने

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

नहीं किया है।" इस अवलोकन से बहुत पहले स्वामी विवेकानन्द ने भारतीयों के दिलो-दिमाग में शक्ति और निर्भयता के प्रति उत्साह भर दिया था; राष्ट्र के लिए सेवा और आत्म-बलिदान के लिए तैयार।

स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद अध्यात्मवाद से जुड़ा है। उन्होंने भारत के उत्थान को आध्यात्मिक लक्ष्य की उसकी सदियों पुरानी परंपरा से जोड़ा। उन्होंने कहा, "प्रत्येक राष्ट्र को पूरा करने के लिए एक नियति है, प्रत्येक राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश है, प्रत्येक राष्ट्र के पास पूरा करने के लिए एक मिशन है। इसलिए हमें अपनी जाति के मिशन को समझना होगा, उसे किस नियति को पूरा करना है, राष्ट्रों की प्रगति में उसे क्या स्थान हासिल करना है, नस्लों के सामंजस्य में उसे क्या भूमिका निभानी है। उनका राष्ट्रवाद मानवतावाद और सार्वभौमिकता पर आधारित है, जो भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएं हैं। उन्होंने लोगों को सबसे पहले स्वयं द्वारा प्रदत्त बंधनों और परिणामी दुखों से छुटकारा पाना सिखाया।

उनके राष्ट्रवाद का स्वरूप भौतिकवादी न होकर पूर्णतः आध्यात्मिक है, जो भारतीय जीवन की समस्त शक्ति का स्रोत माना जाता है। पश्चिमी राष्ट्रवाद जो प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष है, के विपरीत, स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रक्त है। जनता के प्रति गहरी चिंता, स्वतंत्रता और समानता जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करता है, विश्व भाईचारे के आधार पर दुनिया का आध्यात्मिक एकीकरण और निस्वार्थ सेवा के माध्यम से राजनीतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए नैतिकता की एक प्रणाली "कर्मयोग" उनके राष्ट्रवाद का आधार बनती है।

उनके लेखन और भाषणों से जादुई प्रभाव पैदा होता था। उनके शब्दों ने न केवल भारतीयों के मन को आंदोलित किया बल्कि मातृभूमि के प्रति प्रेम भी जागृत किया। उन्होंने मातृभूमि को देशवासियों के मन और हृदय में पूजनीय एकमात्र देवता के रूप में स्थापित किया।

उन्होंने भारतीय हितों की पूर्ण उपेक्षा करने वाली मुनाफाखोरी की ब्रिटिश नीति को उजागर करके राष्ट्रीय भावना को जागृत किया। उन्होंने यूरोपीय औपनिवेशिक योजनाओं को भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझाते हुए ब्रिटिश शासकों को हतोत्साहित किया। उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन को लोकप्रिय बनाया जिससे पूरे देश में एक नया भारत उभर कर सामने आया। जैसा कि उन्होंने कहा था, "हल थामे किसान की झोपड़ी से एक नए भारत का उदय हो; मछुआरे, मोची और सफाईकर्मी के दिल से बाहर। उसे पंसारी की दुकान से, पकौड़े बेचने वाले के तंदूर के पास से आने दो। उसे फ़ैक्टरी से, बाज़ारों से और बाज़ारों से निकलने दें। उसे पेड़ों और जंगलों से, पहाड़ियों और पर्वतों से बाहर आने दो"

स्वामी विवेकानन्द के भाषणों और लेखों द्वारा भारतीयों के आंदोलित मन और हृदय में सभी विरोधों के विरुद्ध सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए जो साहस और दृढ़ संकल्प पैदा हुआ, उसे अरबिंदो घोष ने पीढ़ी दर पीढ़ी पोषित किया। सर्वोच्च बलिदान के लिए तैयार इस भारतीय मानसिकता ने "अहिंसा" और "सत्याग्रह" पर आधारित महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के लिए लॉन्चिंग पैड प्रदान किया।

स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिकता को विविध भारत की सभी धार्मिक ताकतों के लिए एक राष्ट्रीय धारा में एकीकृत होने में सक्षम अभिसरण के बिंदु के रूप में देखा। विवेकानन्द की तरह, अरबिंदो घोष और महात्मा गांधी ने भी महसूस किया कि धर्म और आध्यात्मिकता भारतीयों की रगों में है और उन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता की शक्ति को जागृत करके भारत के एकीकरण के लिए काम किया।[13,14,15]

1893 में शिकागो में उनके भाषण ने उन्हें विश्व धर्म संसद में सबसे महान व्यक्ति और भारत को धर्म की जननी के रूप में स्थापित किया। "दुनिया में भिक्षुओं के सबसे प्राचीन संप्रदाय, संन्यासियों के वैदिक आदेश, एक ऐसा धर्म जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाया है" की ओर से सबसे युवा राष्ट्रों का अभिनंदन करते हुए स्वामी विवेकानंद ने " शिव महिम्ना" से दो उदाहरणात्मक अंश उद्धृत किए। स्तोत्रम ": "जिस प्रकार अलग-अलग धाराओं के स्रोत अलग-अलग स्थानों पर होते हैं, वे सभी अपना जल समुद्र में मिला देती हैं, उसी प्रकार, हे भगवान, मनुष्य जो अलग-अलग रास्ते अपनाते हैं, अलग-अलग प्रवृत्तियों के माध्यम से, भले ही वे टेढ़े या सीधे दिखाई देते हों, वे सभी रास्ते की ओर ले जाते हैं तुम!" और "जो कोई भी मेरे पास आता है, चाहे वह किसी भी रूप में हो, मैं उस तक पहुंचता हूं; सभी मनुष्य उन रास्तों से संघर्ष कर रहे हैं जो अंततः मुझ तक पहुंचते हैं।"
उनके भाषण की संक्षिप्तता के बावजूद, इसने संसद की भावना और सार्वभौमिकता की भावना को व्यक्त किया। संसद में उनके अन्य भाषणों में भी सार्वभौमिकता का सामान्य विषय था, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता पर जोर दिया गया था

21 वीं सदी की शुरुआत के बाद से दुनिया उथल-पुथल में है और एक तरह के संक्रमण काल से गुजर रही है। मानव इतिहास की इस घड़ी में सार्वभौमिक भाईचारे और सद्भावना के आधार पर देश और दुनिया के आध्यात्मिक एकीकरण को बढ़ावा देने वाला स्वामी विवेकानन्द का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। इसमें व्यक्तियों और राष्ट्रों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करते हुए युद्धों को टालने की क्षमता है।

परिणाम

इस संसार में मनुष्य योनि से बढ़कर और कुछ भी नहीं। मनुष्य प्रयास से अपने अन्दर दैवी गुणांे को समाहित करने मंे समर्थ है तथा पाश्विक वृत्ति को स्वीकार कर वह समस्त ब्रह्माण्ड मंे खुद को पतित सिद्ध कर सकता है। मूल्य परायण सुसंस्कृत व्यक्तित्व का

निर्माण मनुष्य का लक्ष्य होता है जो परिवार से विश्व तक सुख-शांति और समृद्धि का वातावरण प्रशस्ततर करता है। जबतक मूल्य के स्वरूप का बोध नहीं होता है, कार्य रूप में स्वीकार नहीं किया जाता, अपने अन्दर उसे गुम्फित न किया जाता तब तक सुसंस्कृत व्यक्तित्व का निर्माण असंभव है।

मानव मन की दो गतियाँ होती हैं - प्रवृत्ति और निवृत्ति। इन दोनों में निवृत्ति श्रेष्ठ होती है परन्तु यदि प्रवृत्ति लोकपरायणा या लोकोपकारिका हो तो वह भी श्रेयस्करी समझी जाती है। खुद को छोड़ परोन्मुखी भाव हीं मानवीय चेतना होती है। महान ऋषि-मुनि तपस्वी महात्मा जीवन के सम्यक् संचालन के लिए जिस मार्ग को स्वीकार करते हैं वही आजतक हमारे आदर्श मानवमूल्य और अक्षयनिधि हैं क्योंकि "महाजनो येन गतः सः पन्था" अर्थात् महापुरूषों के अपनाए मार्ग हीं हमारे जीवन को लक्ष्य प्राप्त कराने वाले पथ हैं।

भारतवर्ष धर्मप्राण देश है और भारतीय संस्कृति धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत है। भारतीय धर्म का आधारपीठ है- आस्तिकता, सर्वशक्तिशाली भगवान की जागरूक सत्ता में अटूट विश्वास। धर्म के प्रमुख चार अंग या विषय हैं। प्रथम अंग आचार विषयक है तो द्वितीय व्यवहार सम्बन्धी। तीसरा विषय प्रायश्चित और चैथा कर्मफल।

आज भारतवर्ष को स्वतन्त्रता प्राप्त किये छः दशक बीत गये।वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ भौतिक प्रगति भी हुई परन्तु कहीं न कहीं धार्मिक भावना का ह्रास हुआ फलस्वरूप चारित्रिक पतन यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। हिंसा, अपहरण, उत्कोच, भ्रष्टाचार, व्यभिचार इत्यादि घटनाओं का अम्बार लगा है। युवाशक्ति के विवेक का जागरण आवश्यक है। एतदर्थ वैश्वीकरण के आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में स्वामी विवेकानन्द के विचारों के आधार पर विभिन्न मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है। साथ हीं उपनिषद् वाक्य "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत" सहित स्वामीजी द्वारा बताये गये राष्ट्र की महत्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, आध्यात्म, धर्म आदि के सन्दर्भ में विभिन्न ग्राह्य तत्वों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।[16,17,18]

सर्वविदित है कि स्वामी विवेकानन्द (1862-1902) का मूल नाम नरेन्द्र दत्त था और वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातक थे। आध्यात्मिक जिज्ञासा के कारण हीं वे श्री रामकृष्ण के सम्पर्क में आए और उनसे प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए। मन्दिर के पुजारी उनके गुरू स्वामी राकृष्ण परम हंस परम्परागत तरीके से संन्यास, ध्यान और भक्ति के द्वारा मोक्ष प्राप्त करने में विश्वास रखते थे। भारतीय आस्तिक दर्शनों में उनकी अपार श्रद्धा थी और समस्त धर्मो की मौलिक एकता में अटूट विश्वास। वे मानव सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे। अपने गुरू के प्रकाशलीन होने के बाद विवेकानन्द ने संन्यास धारण कर लिया और धार्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया।

स्वामी विवेकानन्द के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। स्वामी जी के विचारों के अन्तस्तल में जाने से पूर्व हमें यह समझना होगा कि स्वामी जी को द्वन्द्व की स्थिति से निकालने वाले उनके गुरू 'रामकृष्ण' मूर्तिपूजक थे और उसे शाश्वत, सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्राप्त करने का एक साधन मानते थे। कर्मकाण्ड की अपेक्षा आत्मा पर अधिक बल देते थे। ईश्वर प्राप्ति के लिए उसके प्रति निःस्वार्थ और अनन्य भक्ति में विश्वास रखते थे। तान्त्रिक, वैष्णव और अद्वैत तीनों प्रकार की साधना करने वाले परमहंस ने निर्विकल्पक समाधि की स्थिति को प्राप्त कर ली थी। स्वाभाविक है कि स्वामी विवेकानन्द के विचार अपने गुरू से प्रभावित थे। इसकी झलक बार-बार दिखाई पड़ती है।

1893 में 'शिकागो' में हुई 'पार्लियामेन्ट ऑफ रिलीजन्स' में अपनी विद्वतापूर्ण विवेचना के द्वारा उन्होंने पूरी दुनियाँ का ध्यान अपनी ओर खींचा और उनके अद्वितीय तात्विक विवेचन के सारे लोग क़ायल हुए। उस भाषण का मूल तत्व था कि मानव को भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद के बीच एक स्वस्थ संतुलन स्थापित करना है। सम्पूर्ण संसार के लोगों को प्रसन्नता तभी प्राप्त होगी जब पश्चिम के भौतिकवाद और पूरब के अध्यात्मवाद का उनके जीवन में मिश्रण नीर-क्षीरवत् हो। सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण ही विश्व के लिए कल्याणप्रद हो सकता है। उपनिषद् का आर्ष वाक्य "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" की नई एवं प्रभावकारी व्याख्या जो स्वामीजी के द्वारा प्रसूत हुई, निःसन्देह आज भी अनेक समस्याओं के निराकरण में प्रभावकारी भूमिका अदा कर सकती है।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने लेखों एवं भाषणों के जरिए जो विचार प्रस्तुत किया है उसमें मुख्यतः "आत्मविश्वास" "आत्मगौरव की भावना" एवं "भारतीय संस्कृति में नूतन विश्वास" पर काफी बल दिया है। उनके इन्हीं तथ्यों को देखकर कहा जा सकता है कि स्वामी जी पक्के "राष्ट्रवादी" थे। इसी कारण महान् स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस ने स्वामी विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का "आध्यात्मिक पिता" कहकर सम्बोधित किया। विवेकानन्द के विचारों के तथ्य शाश्वत हैं और आज भी आत्मसात करने योग्य हैं। स्वामी जी का लक्ष्य समाज में समताभाव को स्थापित करना था, अतएव वे दलितों, गरीबों, शोषितों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील थे। आज भी समाज एवं राष्ट्र का एकांगी विकास हीं दिखाई दे रहा है। समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए दलितों, गरीबों, शोषितों के प्रति समाज के धनाढ्य कुबेरों को अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है। स्वामीजी का यह

कथन कि दरिद्र ही देवता हैं, नर सेवा हीं नारायण सेवा है आदि राष्ट्र में विषमता की खाई को पाटने में महŸवपूर्ण योगदान दे सकता है। ‘‘मानवता की सेवा’’ ही हमारे धर्म का मूल है अतएव उसे अपनाना हीं श्रेयष्कर होगा। नक्सवाद, उग्रवाद एवं भष्टाचार के उन्मूलन में यह विचारधारा कारगर सिद्ध हो सकती है। हमें मनसा-वाचा-कर्मणा स्वामी जी के इस उद्देश्य को अंगीकार करना पड़ेगा तभी समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व का कल्याण सम्भव है।

विवेकानन्द प्रबल मानवतावादी थे। इन्हीं भावनाओं से अभिभूत होकर उन्होंने कहा - ‘‘एकमात्र भगवान जिसमें मैं विश्वास करता हूँ वह है सभी आत्माओं का कुल योग और सबसे पहले मेरे भगवान सभी जातियों के कुष्ठपीड़ित, दरिद्र हैं।’’ इसी सन्दर्भ में उन्होंने कहा - ‘‘जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से पीड़ित हैं तब तक मैं उस हर व्यक्ति को देशद्रोही समझूँगा जो उनके खर्च से शिक्षित बनकर उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता।’’

स्वामी जी ने अपनी मानवतावादी विचार धारा के कारण हीं ‘रामकृष्ण मिशन’ की स्थापना की। आज भी मिशन के कार्य सराहनीय हैं। मेरी मान्यता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र में मानवतावादी विचारधारा को बल मिलना चाहिए तभी भारतवर्ष विकसित कहा जा सकता है।

स्वामी जी का इहलौकिक धर्म आत्म-सहायता एवं पौरूष-शक्ति के निर्माण पर बल देने वाला है। उनका कथन - ‘‘ आज हमारे देश को आवश्यकता है लोहे के स्नायुओं एवं इस्पात की नाड़ियों की।’’ यह कथन क्या आज प्रासंगिक नहीं है? मित्रो! अक्षरशः प्रासंगिक है। विल्कुल प्रासंगिक है। ‘दद्रिनारायण’ की परिकल्पना विषमता को दूर करने वाली है। इसे अपनाना आज का ‘राष्ट्र धर्म’ और ‘राज धर्म’ दोनों होना चाहिए। स्वामी जी का यह कथन -‘‘ निम्न वर्गो को मत भूलो, उन्हें मत भूलो जो अज्ञानी, दरिद्र और अनपढ़ हैं - मोची और मेहतर हैं, वे भी तुम्हारे हीं रक्त-मांस हैं, तुम्हारे हीं बन्धु हैं।’’ उनकी यह उक्ति माननीय सांसदों, विधायकों और तथाकथित जनप्रतिनिधियों को हीं नहीं प्रख्यात उद्योगपतियों, पूँजीपतियों एवं बुद्धिजीवियों को भी अपनाना होगा अन्यथा जो वर्Ÿामान में हो रहा है वह कितना दुःखद है, यह किसी से छिपा नहीं। स्वार्थ को त्यागना और परमार्थ पर चलना ही आज भी श्रेयष्कर है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि स्वामी जी के विचार आज न केवल प्रासंगिक हैं वरन् उपादेय भी हैं। भारतवर्ष का स्वर्णिम भविष्य इन्हीं मार्गो से होकर गुजरता है, अतएव विवेकानन्द के पथ का हमें अनुगामी बनना पड़ेगा। निश्चय ही इस पथ पर चलकर हम वर्Ÿामान समस्याओं से निज़ात पा सकते हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति भी यही उपदेश करती है -

‘‘ अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।’’

इस पर चलकर ही हम गर्व से कह सकते हैं -

‘‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।।’’ [19]

निष्कर्ष

भारत की उर्वर भूमि आदिकाल से ही महान रत्नों को पैदा करती रही है,जिन्होंने अपने आचार-विचार से समूचे विश्व का मार्गदर्शन किया है।समय-समय पर अपने अपने बौद्धिक श्रेष्ठता से इन हुतात्माओं ने पूरी दुनिया का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है। स्वामी विवेकानंद इसी अद्वितीय ज्ञान सम्पदा से परिपूर्ण महान श्रृंखला के प्रकाशपुंज हैं जिनके सिद्धांतों का पल्लवन हम आजतक करते रहे हैं।

12 जनवरी 1863 को एक सम्पन्न बंगाली परिवार में जन्मे बालक का नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द बनने का सफर काफी प्रेरणादायी है।इनके गुरु रामकृष्ण परमहंस एक सिद्धपुरुष थे और उनकी छाप स्वामीजी के कार्यों से परिलक्षित होती है।अईसे युगद्रष्टा महामानव द्वारा प्रतिपादित ज्ञान अपने समय-देश-काल की सीमाओं से परे आजतक प्रासंगिक बना हुआ है। आज 21वीं सदी में जब हम नित नयी समस्याओं का सामना कर रहे हैं, भविष्य को लेकर हमारी महत्वाकांछा हमारे वर्तमान पर हावी हो रही हैं।आज की पीढ़ी के सामने अपने अस्तित्व को परिभाषित करने की चुनौती है,साथ ही जब दुनिया में जब हर मौलिक वस्तुओं का बाज़ारीकरण हो रहा है तब स्वामी विवेकानंद का महत्व हमारे लिए काफी बढ़ जाता है। उनके विचार हरपल बैचैन दुनिया में ठीक उसी तरह सुकूनदेह है जैसे किसी प्यासे के लिए रेगिस्तान में सुदूर मरूद्यान(Oasis) का

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

होना।इसीलिए वर्तमान भौतिकतावादी युग में विवेकानन्द की विचारधारा की प्रासंगिकता कई गुणा बढ़ जाती है। आजजब हर वक़्त हमारे प्राचीन ज्ञान तथा वैदिककालीन सम्पदा पर हरसम्भव कुठाराघात करने की कोशिश की जा रही है तो ऐसी परिस्थिति के बीच विवेकानन्द का वेदांत दर्शन हमारे लिए काफी लाभदायक है जो इन पुरातन बौद्धिक संपदा का आधुनिक विमर्श के अनुसार विवेचना करती है।यों भी भारतीय दर्शन से पश्चिमी दुनिया को वाकिफ कराने का श्रेय इनको जाता है। स्वामीजी एक महान दार्शनिक होने के साथ उत्कृष्ट शिक्षाविद भी थे।इनके कथनों तथा दर्शन पर विश्वभर के विद्वानों तथा विचारकों ने गहन अध्ययन किया है।उनके विचारों को आत्मसात करने के लिए उनके कहे कर्मप्रधान मार्ग पर ही चलना होगा,जिसके अनुसार सार्थक जीवन जीने के लिए उसके विभिन्न आयामों जैसे शारीरिक,सामाजिक,बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर ध्यान देना होगा।

शारीरिक तौर पर वे हमेशा हृष्ट-पुष्ट काया के पक्षधर रहे हैं।राष्ट्र के नवयुवकों से वो हमेशा शारीरिक सैष्ठव और बल पर ध्यान देने को कहते रहे हैं,क्योंकि उनके अनुसार स्वस्थ काया में ही स्वस्थ मन का वास हो सकता है।इसी वजह से उन्होंने कहा था की गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल खेलकर ईश्वर के ज्यादा करीब जाया जा सकता है।विवेकानंद ने सामाजिक कार्यों को ही भगवत्प्राप्ति का मार्ग बताते हुए ,नर सेवा ही नारायण सेवा का अदभुत ज्ञान दिया था।आज जब हम खुद को समाज से विमुख स्वकेंद्रित होते जा रहे हैं तो उनका ये ज्ञान हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।इसी सामाजिक आयाम की कड़ी में उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी समाज के श्रेष्ठी वर्ग के लोगों को अपने से निचले वर्ग के प्रति उनकी जिम्मेदारियों का बोध करवा पाना।जब दिन-ब-दिन पूंजीवादी युग में समाज में ऊँच-नीच की खाई और गहरी होती जा रही है तो ऐसे में स्वामीजी का विचार सामाजिक समरसता को बनाये रखने का सबसे अच्छा और प्रगतिशील मार्ग साबित हो सकता है।विवेकान्द के अनुसार एक ऐसी सामाजिक संरचना का निर्माण हो जहाँ न कोई शोषक हो और न कोई शोषित,यही अवधारणा नए भारत के निर्माण को फलीभूत कर सकती है।

शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने समझाया कि प्रगतिशील भारत के निर्माण के लिए सबसे मुख्य औज़ार शिक्षा ही है जो लोगों को सशक्त बना सकती है।व्यक्ति का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त कर स्वयं के बौद्धिक स्तर का विकास करना और फिर उस ज्ञान को समाज के अन्य लोगों तक प्रसारित करना होना चाहिए।स्वामी विवेकान्द खुली विचारधारा के पैरोकार थे।उनके अनुसार हम पश्चिम से काफी कुछ सिख सकते हैं ,लेकिन जरूरी है की हमारा अपनी प्राचीन विरासत तथा आत्मिक बहुलता पर भी उतना ही यकीन हो।उनका मानना था कि हमारे लोगों को अपनी समृद्ध ज्ञान-परम्परा पर भी गर्व हो न की हम अपनी जड़ों को त्यागकर सिर्फ पाश्चात्य शैली का अंधानुकरण करें।

आज भौतिक सुख सुविधाओं की बहुलता के बावजूद बढ़ते एकाकीपन और तनाव के माहौल में स्वामी विवेकानंद हमें जीवन के असली मकसद और आध्यात्मिक शांति की ओर अग्रसर रहने को प्रेरित करते हैं।इसीलिए उन्होंने दैनिक जीवन में ध्यान पर् काफी जोर दिया है।उनके दर्शन के अनुसार हमारा संपूर्ण जीवन किसी विशिष्ठ उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समर्पित होना चाहिए।

राष्ट्रनिर्माण के संबंध में भी उनका काफी उत्कृष्ट मत था।राष्ट्र के युवाओं से उन्होंने राष्ट्रनिर्माण यज्ञ में अपनी श्रमशक्ति का सामूहिक योगदान के लिए आह्वान किया है।विभिन्न साधन और साध्य का प्रयोग करते हुए राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रखने के उनके विचारों पर आज ज्यादा जोर देने की आवश्यक्ता है क्योंकि आज हमारे राष्ट्र को खंडित करने की कोशिश में कई प्रकार की शक्तियाँ पुरजोर तरीके से लगी हुई हैं।

स्वामी विवेकानंद आधुनिक युग के कर्मयोगी थे क्योंकि उन्होंने अपने विचारों अपने जीवन में उतारकर परिभाषित किया।उनका जीवन चरित्र मन से वचन से और अपने कर्म से एक होने की अद्भुत मिसाल है।
मैं अपनी बात का अंत बस यही कहकर करूँगा की आज 21वीं सदी में जीवन में मौजूद सभी चुनौतियों का समाधान स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में है ,बस जरुरत है उनके सिद्धांतों या उनकी विचारधारा को सुनियोजित तरीके से आत्मसात करने की। उनका समस्त दर्शन न सिर्फ इस सदी में बल्कि युग-युगान्तर तक प्रासंगिक और प्रेरणादायी साबित होता रहेगा।

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।।[20]

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1102005

संदर्भ

1. Aspects of the Vedanta, p.150
2. ↑ "Bhajanānanda (2010), Four Basic Principles of Advaita Vedanta, p.3" (PDF). मूल से 7 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2016.
3. ↑ Michelis 2005.
4. ↑ Dutt, Harshavardhan (2005), Immortal Speeches, नई दिल्ली: Unicorn Books, p. 121, ISBN 978-81-7806-093-4
5. ↑ "Swami Vivekananda Punyatithi [Hindi]: स्वामी विवेकानंद जी क्यों रहे मोक्ष से वंचित". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2021-07-04. अभिगमन तिथि 2021-07-04.
6. ↑ क्रान्त (2006). / स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास जाँचें |url= मान (मदद). 2. नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ॰ 390. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7783-119-4. मूल से 14 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 जुलाई 2013.
7. ↑ शुक्ल, पंडित विद्याभास्कर. "स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय". मूल से 19 अगस्त 2019 को पुरालेखित.
8. ↑ Paul 2003, पृ॰ 5.
9. ↑ Banhatti 1995, पृ॰ 1.
10. ↑ Badrinath 2006, पृ॰ 3.
11. ↑ Bhuyan 2003, पृ॰ 4.
12. ↑ Nikhilananda 1964.
13. ↑ Sen 2003, पृ॰ 20.
14. ↑ Banhatti 1995, पृ॰ 2.
15. ↑ Banhatti 1995.
16. ↑ Banhatti 1995, पृ॰ 4.
17. ↑ Chakrabarti 2001, पृ॰प॰ 628–631.
18. ↑ Sen 2003, पृ॰ 21.
19. ↑ Sen 2006, पृ॰प॰ 12–14.
20. ↑ Sen 2003, पृ॰प॰ 104–105.

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com